भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान
ICAR-Indian Institute of Soybean Research
खंडवा रोड, इन्दौर–452001 (म.प्र.)
Khandwa Road, Indore-452001

फाइल नं. **F.No. : तिलहन/विचारमंथन बैठक** / प्रेस विज्ञप्ति / 2020 दिनांक **Date: 24.09.2020**

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय तिलहन विचार मंथन बैठक एवं अनुसंधान–उद्योग–कृषक परिचर्चा के द्वितीय दिन के अवसर पर आयोजित आज दिनांक 24 सितम्बर, 2020 को ''तिलहनी फसल अनुसंधान एवं उद्योग जगत की चुनौतियाँ'' पर तकनीकी सत्र का आयोजन आनलाईन माध्यम से संस्थान की वेबसाईट तथा यू–ट्यूब चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया। इस तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. डी.के. यादव, सहायक महानिदेशक (बीज), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली तथा सह–अध्यक्षता डॉ. रतन शर्मा, तकनीकी प्रतिनिधि संयुक्त अमेरिका सोयाबीन निर्यात परिषद द्वारा की गई।

इस तकनीकी सत्र में देश के विभिन्न क्षेत्रों से तिलहनी फसलों पर अनुसंधान, विकास एवं विस्तार कार्यक्रम तथा उद्योग जगत से जुडे लगभग 170 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तकनीकी सत्र के प्रांरभ में भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर की निदेशक डॉ. नीता खांडेकर ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए तिलहनी फसलों के विकास तथा खाद्य तेल उत्पादन में आत्मनिर्भरता लाने हेतु समुचित प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

तकनीकी सत्र के प्रारंभ में साल्वेंट एक्स्ट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के कार्यकारी निदेशक डॉ. बी. वी. मेहता ने देश में खाद्य तेल के उत्पादन हेतु स्थापित किये गये साल्वेंट एक्स्ट्रेक्शन्स इकाईयों के विकास की क्रमवार जानकारी दी। उन्होंने देश में वर्तमान स्थिति में खाद्य तेल उत्पादन, आयात तथा उपभोग की जा रही खाद्य तेल की वार्षिक मात्राओं के आंकड़े का तुलनात्मक दृश्य प्रस्तुत करते हुए भविष्य में आने वाली संभावित स्थिति का अवलोकन करते हुए बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकता पूर्ति हेतु देश में तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाने हेतु विभिन्न कार्यक्रम जैसे राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन के क्रियान्वयन हेतु ठोस उपाय योजना की आवश्यकता पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने अनाज वर्गीय फसलों से तिलहनी फसलों के उत्पादन के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने एवं इन फसलों की अधिक उत्पादन क्षमता का दोहन करने हेतु जी.एम. किस्मों को भविष्य में अपनाने हेतु नीतियों में संशोधन करने हेतु यथोचित बदलाव किया जाना चाहिए।

तत्पश्चात् द्वितीय कृषि (मूल्य संवर्धन, खाद्य उपयोग) के लिए तिलहनी फसलों की उपयोगी क्षमता का दोहन करने हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली की जैव रसायन विभागाध्यक्ष डॉ. शैली परवीन ने तिलहनी फसलों की भूमिका एवं द्वितीय कृषि से प्राप्त आर्थिक एवं औद्योगिक लाभ को कृषकों के उत्थान हेतु उपयोग किया जाना चाहिए। उनके अनुसार उन्होंने विभिन्न खाद्य तेलों के सम्मिश्रण करते हुए मूल्य संवर्धन करते हुए आर्थिक लाभ की संभावना के अवसरों का दोहन किया जाना चाहिए।

इस अवसर पर आई.टी.सी. समूह के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. जी.वी.एस. सांई प्रसाद ने तिलहनी फसलों में कटाई उपरांत प्रसंस्करण तकनीकी की चर्चा की। उन्होंने तिलहनी फसलों से प्राप्त होने वाली पोषण सुरक्षा में वृद्धि हेतु तिलहन आधारित प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थो के उपयोग बढ़ाने की अनुशंसा की जबकि डॉ. दिनेश भोंसले (रीजनल सेल्स डायरेक्टर, साउथ एशिया, ए.बी. विस्टा) ने तिलहनी फसलों से प्राप्त खली का पोल्ट्री / फिशरी / पशु आहार हेतु उपयोग किये जाने बाबत विस्तृत जानकारी दी।

साथ ही सोनिक बायोकेम एक्स्ट्रेक्शन्स प्रा.लि. के श्री गिरीश मतलानी ने सोया खाद्य तेल एवं प्रसंस्कृत पदार्थो की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हेतु नीतियों में सुधारों की आवश्यकता पर जोर दिया। उनके अनुसार देश से निर्यात होने वाली नान जी.एम.ओ. सोयाबीन के लिए सरकार द्वारा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। साथ ही उन्होंने सितम्बर अक्टूबर माह विगत कुछ वर्षो से हो रही अत्याधिक वर्षा को देखते

हुए मध्यम समयावधि की सोयाबीन किस्में (100 से 110 दिन) का प्रचार–प्रसार एवं अंगीकरण हेतु प्रयास किये जाने चाहिए। सोया खाद्य तेल के साथ–साथ अन्य खाद्य पदार्थो का एक्स्ट्रेक्शन तथा मूल्य संवर्धन के अवसरों का भी लाभ लेने की श्री गिरीश मतलानी ने अनुशंसा की।

इस तकनीकी सत्र में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सचिन कुमार शर्मा ने तिलहनी फसलों के विश्व व्यापार संगठन द्वारा लागू व्यापार करारों के परिप्रेक्ष्य में देश से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार बाबत अपनाई जा रही प्रणाली की चर्चा की तथा इस व्यापार में अनुदान, आधारभूत संरचना, मूलभूत सुविधाओं में सुधार, ट्रांसपोर्टेशन आदि में सुधार किये जाने पर जोर दिया।

इस तकनीकी सत्र के अंत में झी बिजनेस समूह के श्री मृत्युंजय झा द्वारा खाद्य तेल में आत्मनिर्भरता के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान परिदृश्य तथा आयात संबंधी नीतियों की चर्चा की। उन्होंने देश में खाद्य तेल के आयात को कम किये जाने पर जोर दिया तथा कहां कि आयात संबंधी ऐसी नीतियाँ होनी चाहिए जिससे कृषकों के तिलहनी उत्पादन को बढ़ावा मिले, साथ ही लागत में भी कटौती हो। इसके साथ कृषकों को समय–समय पर नवीनतम उन्नत किस्मों तथा तकनीकी की जानकारी देने हेतु सुदृढ़ व्यवस्था होनी चाहिए।

तकनीकी सत्र के अंत में अध्यक्ष डॉ. डी.के. यादव ने सत्र में शामिल सभी प्रतिनिधियों से प्राप्त चुनौतियों एवं अनुशंसाओं का सार प्रस्तुत करते हुए तिलहनी फसलों की प्रति इकाई उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि हेतु क्षेत्र विशेष रणनीतियों को अपनाने की अनुशंसा की। इसी प्रकार भविष्य में संभावना को देखते हुए भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित खाद्य उपयोगों के लिए उपयुक्त विशिष्ट सोयाबीन किस्मों का प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए जिससे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में कुपोषण की समस्या से निजात दिलाने हेतु इसका उपयोग किया जा सके।

इस तकनीकी सत्र के आयोजन में भारतीय सोयाबीन अनुसंधान अनुसंधान के डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा तथा डॉ. देव व्रत सिंह ने अपनी भूमिका निभाई तथा डॉ. विनीत कुमार ने उपस्थितों को धन्यवाद ज्ञापित किया।